कबीरा

जो बचेगा कैसे रचेगा

राजीव मित्तल

कबीरा

जो बचेगा कैसे रचेगा

राजीव मित्तल

अपनी बात

जनम देश की राजधानी दिल्ली और पढ़ाई का बड़ा हिस्सा उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ, जहां बी.ए, पास करने तक अपना एकेडमिक कैरियर इस क़दर नामुराद हो चला कि लखनऊ यूनिवर्सिटी ने एम.ए. में एडमिशन देने से साफ मना कर दिया। एक साल जब बट्टेखाते में चला गया तो चाचा प्रभात मित्तल ने उबारने का ज़िम्मा लिया और हापुड़ के एक कॉलेज में दाख़िला करा दिया। दो साल बाद एम.ए. की डिग्री अपने पास थी...लेकिन उससे भी ज़्यादा बहुत कुछ हाथ लगा, वो था किताबों का अद्भुत संसार।

प्रभात जी की लाइब्रेरी छोटी पड़ी तो उनके मित्र अशोक अग्रवाल का कारू का ख़ज़ाना खुल जा सिमसिम कहे बगैर अपने हाथ लग गया था। ऊपर से इन दोनों मित्रों के यहां आए दिन साहित्यकारों का आगमन। अशोक जी तलाश-तलाश कर किताबें पढ़वाते और उन सब से मिलवाते। ऐसी ही मेल-मुलाक़ात के लिए दिल्ली भी उनके साथ जाना होता। एक दिन हापुड़ की सड़कों पर टहल रहे निर्मल वर्मा से मिलना हुआ...उनका लिखा काफ़ी कुछ पढ़ चुका था...विश्वास नहीं हुआ कि वो सामने खड़े हैं...

हापुड़ छोड़ने के बाद भी जब-तब चला आता और अशोक जी के साथ घंटों बैठकी करता। प्रभात जी नहीं रहे, वहां जाना बंद सा हो गया और ज़िंदगी कई आपाधापियों में फंस गयी...पर, हापुड़ को नहीं भूला।

कैरियर नाम की बला सूचना विभाग, लखनऊ से शुरू हुई, जो नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, स्वतंत्रभारत, बिज़नेस इंडिया टीवी, सहारा टीवी और अमर उजाला...यानि लखनऊ, चंडीगढ़, कानपुर और दिल्ली तक बगैर रुके अपने सिर पर सवार रही...क्या सरकारी दफ़्तर और क्या अख़बार की चाकरी, दोनों जगह हाल एक सा ही...वही आगे बढ़ने की अंधी दौड़, तमाम तरह के प्रपंच, तेरी-मेरी...जी उकता

गया इन सब से...कुछ महीने घर में...या मन की नौकरी तलाशने में गुज़ार दिये...महीनों बाद पुराने साथी नवीन जोशी का फ़ोन आया। ज़ल्दी आओ...और मृणाल जी से मिलो। वहां हिन्दुस्तान में समाचार सम्पादक की नौकरी मिल गयी। पर, जाना था बिहार के मुज़फ्फरपुर में...घर-बार छोड़कर वहां जा पहुंचा।

करीब सात साल बाद एक पूरे अख़बार की ज़िम्मेदारी ऐसे शहर में संभालनी थी,जहां कुछ भी अपना नहीं था। खुद को काम में झौंक पान खा-खाकर दिन गुज़ारने लगा। रात के दो बजे तक अख़बार का काम...तीन बजे अपने कमरे में, जहां साथ देने को किताबों का ढेर...

फिर आया 2004 का लाकसभा चुनाव। नवीन जोशी पटना से लखनऊ जा चुके थे। वहां से आने लगे उनके संदेश...अब तो लिखाना शुरू कर नालायक। फिर साठ दिन के चुनाव अभियान के दौरान पैंतालिस दिन छपा...चुनाव ख़त्म हो गये, पर लिखना बंद नहीं हुआ...और नज़रिया, बाढ़नामा, दंडकारण्य की डायरी, नक्कारखाना जैसे कॉलम भरते चले गए...2005 में विधानसभा चुनाव भी 'बिहार-बिहार' कॉलम में निपटाया...

2007 के जून तक मुज़फ्फरपुर में...वहां की मिट्टी ने पता नहीं ऐसा कौन सा जादू कर दिया था कि पौने पांच साल के प्रवास में तक़रीबन तीन साल तक रात दो बजे के बाद कुछ न कुछ ज़रूर लिखता और सुबह सात बजे घर जाकर सोता। इस दौरान कई साहित्यिक पत्रिकाओं मसलन पहल, तद्भव और दस्तावेज़ में भी पढ़ा गया...

मुज़फ्फरपुर के बाद जबलपुर नईदुनिया...फिर मेरठ हिन्दुस्तान में...फिर कानपुर...बाइस साल बाद लखनऊ में...फिर वही हिन्दुस्तान...तब तक अख़बारी काम और लिखने-पढ़ने में ही इस क़दर मशगूल रहा कि अपने लिखे को कभी संकलित करने का विचार ही नहीं आया...अत: जो थोड़ा-बहुत बचा पाया वो अशोक जी और बड़ी बहन कनु की प्रेरणा से पुस्तक रूप में प्रस्तुत कर पाया हूँ...आशा है कि पत्रकारिता की नयी पौध को एक नयी समझ दे पाऊँगा...

प्रख्यात कवि स्व. श्रीकान्त वर्मा की हवन कविता की पंक्ति का इस्तेमाल शीर्षक के साथ करने के लिए हार्दिक आभार।

03-01-2015 - राजीव मित्तल

क्रम

1 नज़रिया

2 बाढ़नामा

3 दण्डकारण्य की डायरी

4 नौटंकी

5 नक्कारखाना

नज़रिया

एक सफ़रनामा है नज़रिया। बिहार प्रमुखता से शामिल है। पर देश के हर राज्य पर उतना ही मौजू। विकास की धारा अनियंत्रित हो पैसे से लिथड़ी एक नाला बन चुकी है, जिसमें आचमन हर कोई ले रहा है। दशे को भाड़ में झोंकता हुआ आज़ादी से पहले के मूल्यों को तहस-नहस करता हुआ। नेता-अफसर-माफिया के गठजोड़ के शिकंजे में फंसा भारत हर किसी को लुभा रहा है। इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी !

कलयुग का क्लाइमैक्स

उर्फ किस्सा उन खुशनसीबों का

जिनकी हर सुबह होली हर रात दीवाली है

सतयुग में किसी ने किसी से एक सवाल किया था कलयुग क्लाईमैक्स पर कब होगा ? जवाब देने वाले ने कई कलाबाजियां लगाईं। चूंकि 33 करोड़ देवताओं के स्थान उस समय रिक्त थे, इसलिए इन-मिन-पिन्न-उंझा झीं जैसे कुछ शब्दों का 18 लाख बार जाप किया और इस जाप के दौरान ही कहीं से आवाज आई, जब जिनकी हर दिन होली, हर रात दीवाली, हर सुबह हैप्पी बर्थडे, हर दोपहर किट्टी पार्टी, हर शाम शादी की वर्षगांठ और हर रात को 12 बजे नया साल मना करेगा। कुछ कुत्ते के पिल्ले सुकुमारियों की गोदी में खेल रहे होंगे, कुछ इंसानी बच्चे कूड़े के ढेर पर मुंह मार रहे होंगे, कुछ के भोजन के लिए दूरदर्शन पर केसर-जाफरान डालकर बिरयानी पकाना सिखाया जा रहा होगा, तो कुछ के लिए डेनमार्क से विषाक्त दूध के डिब्बे आ रहे होंगे, जी.टी.वी. पर कपड़े धोती औरत स्वर्ग में बैठे इंद्र के मुंह में भी पानी ला रही होगी और कालाहांडी की औरत अपने एस्सेट्स की बोली लगा रही होगी, पर कोई नर पिशाच भी पास नहीं फटक रहा होगा।

कांग्रेस पहले समाजवाद की फसल बोएगी, काटेगी, सुखाएगी, धूमधाम से पोंगल मनाएगी फिर उसे गोदामों में भर देगी ताकि उसमें घुन्न लग जाए, समाजवाद के विकल्प के रूप में देश में तमाशावाद आएगा। जिसका पहले हर दल विरोध करेगा, पर बाद में कम्युनिस्ट भी माइकल जैक्सन के साथ कूल्हे मटकाएंगे। धरतीपुत्र की सरकार उन लोगों के सहारे चलेगी, जिनका सदियों से शोषण हो रहा है पर, बालकों के साथ यौनाचार इस सरकार की ही देन होगी।